"चलाक प्राणी/Clever Creature"

19. हे मूर्ख (चालाक प्राणी).....! केवल एक छोटा सा विचारिक सूक्ष्म मानसिक ब्लातकार विशेष भी समाज के किसी भी व्यवहारिक अंग विशेष का व्यवहारिक निश्चित नतिजा विशेष अनन्त काल तक अनेक बार बारम्बार तेरे अपने निजी विशेष पिछवाडे को ही भुगतना पड़ेगा ....! ये नतिजा तो तेरी अपनी इन महान-महान करतूतों का निकल ही चुका है और तुझे गले लगाने के लिये ही केवल तड़प विशेष रहा है बड़ी बेचैनी से और लगातार

तेरी और बढ़ता हुआ तेरे साथ फोटो खिंचवाने को बेताब है....! अब आगे जो भी घटेगा तेरे अपने निजी विशेष चमकदार मटकने वाले पिछवाडे विशेष में ही पूरी तरह से सम्पन्न विशेष होगा निरन्तर बारम्बार अनन्तकाल तक ....! अब सोच आगे क्या क्या होने वाला है? लाख यत्नों के बाद भी तुझे अपने इन नतिजों को चूमने-चाटने के लिये मज़बूर होना ही पड़ेगा अनन्त-काल के बाद भी पूरी तरह से हजम विशेष करने हेतु .....! अब तू केवल लाटरी का इंतजाम कर सकता हैं तथा चीखने - चिल्लाने कि तुझे पूरी तरह से छूट विशेष है "बोनस के रूप में" ये अलग बात है कि तेरे इन प्रेम-प्रलाप विशेष को सुनने अर्थात "दाद" देने वाला कोई भी नही होगा ....! पूरी सत्ता विशेष भी तेरी मदद करने में असमर्थ विशेष ही है फिर तेरे ये नाम-अमृत- डेरे - स्थान गुरु-मन्त्र - कर्म काण्ड महान दुर्लभ विशेष-विशेष सभी प्रभु के बाप सहित मिल कर के भी तेरी इस कमाई हुई अनन्त ब्लातकारी नतिजों रूपी गिन्ती में से केवल एक गिन्ती कम करने में भी केवल घोर असमर्थ विशेष ही होंगे अपने अकथ अनन्त विशेष-विशेष महान प्रयासो के बाद भी ....! ये तुरन्त विचार कर गांठ बाँध ले .....! यह विधि का विधान हैं आद से निरन्तर कार्यरत और आगे भी सदा रहेगा प्रमाणिक तौर पर .....! जिन -जिन महान करतूतों "गुप्त" की तू कब्र बना कर भूल चुका है यकीन जान विधि की नज़र विशेष में पूरी तरह से चेतन- जागरूक-

प्रफुलित विशेष हैं ....! और कुलबुलाती हुई इन्तजार कर रही हैं उस घड़ी का कि कब तेरी ये बनाई हुई कब्र विशेष "गुप्त" फटेगी और ये भूत की तरह तुझे चिपट जायेगी अपने हृदय के चमत्कारों को तुझे अनुभव विशेष करवाने हेतू ....! क्योंकि हर जर्रा पूरी तरह से विधि की जर रूपी घौर पकड़ विशेष में हैं निरन्तर आवश्यक रूप से । "विधि के नियम" से बाहर विचार रखने वाला भी अपराधी है लेकिन उस से भी बड़ा दोषी वो जीव हैं जो सृष्टि में विशेष तौर पर मनुष्य जाति को गलत दिशा अथवा गुमराह करता है या उस प्रक्रिया का साधन अथवा सामान विशेष बनता है । याद रख "चतुर प्राणी" प्रभु दरबार का सबसे बड़ा "दोषी" यही इज्जतदार - धर्मात्मा महान पुरूष ही है जिस के लिये अलग से विशेष अनुभव करवाने वाले विकराल चैम्बरों विशेषो का इंतजाम किया गया हैं विशेष-विशेष आवश्यक साधनों सहित ...!

साक्षरता आवश्यक है जानकारी तथा मार्गदर्शन हेतु "मनुष्य जन्म अनमोल हैं" उसे समझना बहुत जरूरी है कबीर सूता क्या करे -जागन कि कर चौंप । ये दम हीरा - लाल हैं गिन - गिन गुर (केवल रागमई प्राकाशित आवाज) को सौंप ! कहता हूं- कहे जात हूं - कँहू बजावत ढोल । स्वांसा विरथा जात हैं - तीन लोक का मोल ....!" और आप इतने चतुर हो कि अपनी निजी अनमोल कीमती प्राण रूपी सम्पति विशेष को दोनो हाथों

से कहां - कहां और कैसे - कैसे लुटा विशेष रहे हो निरन्तर मोह-माया के नशे में चूर डुबकियां विशेष लगाते हुऐ "भ्रमण" विशेष महान करते हुऐ लगातार केवल दिवालिया विशेष हो जाने हेतु ही ...! जब कि केवल एक प्राण भी अधिक तीनों लोकों की कुल जमा पूंजी चुका देने पर भी प्राप्त होना केवल धौर असंम्भव विशेष ही हैं प्रत्येक काल में निश्चित रूप से ....! मनुष्य जन्म का प्रत्येक पल पूरी तरह से जागरूक हो कर चौकीदारी करने हेतु ही हैं कि प्रत्येक प्राण "ठीक दिशा में" केवल आवश्यक सीमित पदार्थ विशेष पर ही खर्च हो ताकि मनुष्य जन्म की सफलता को जीते जी अनुभव किया जा सके अर्थात अपने "आधार" का व्यवहारिक बोध विशेष - जिस के लिये तुझे मनुष्य जन्म विशेष मिला है "अनन्त तपों विशेषों को पूरी तरह से सम्पन्न विशेष करने के बाद ...!" और ये सफलता तुझे केवल अपने निजी शरीर विशेष में ही उपलब्ध होगी इसे हमेशा याद रख । बाहर न आज तक किसी को कुछ मिला हैं और न ही आगे कभी किसी को ये मिलेगा ....! यही विधि का वैधानिक आवश्यक सच विशेष है । सुख-दुख अथवा प्रभु के "मिलने न मिलने" का फैसला तेरे अपने निजी निरंतर व्यवहारिक सोच रूपी मर्यादित व्यवहार विशेष से जुड़ा हुआ है । और ये मर्यादित व्यवहारिक कर्म विशेष केवल तुझे ही कमाना हैं और वो भी केवल तुझे अपने ही निजी जीवन विशेष में ह लगातार आखिरी प्राण के खत्म हो जाने से पहले तक । यही

अगले जन्मों का भाग्य विशेष है तेरे स्वंय का कमाया हुआ अथवा सदा के लिये जन्म-मरन से मुक्त हो जाना ....! एक बात निरन्तर याद रख कुछ भी कमाया हुआ कभी भी किसी भी काल में किन्ही प्रयन्नों विशेषों से भी आंशिक रूप से भी बदलना तो दूर रहा केवल हिलाना भी घौर असम्भव विशेष ही हैं यकिनी तौर पर ...!

साक्षरता का अर्थ अपने अधिकार और कर्त्वयों का पूरी तरह से जागरूक व्यवहारिक विवेकशील बोध विशेष होना है । न की केवल लोभ-स्वार्थ सहित अपनी निजी वासनाओं को पूरा करने हेतु उन का "दुरुपयोग" । इस वैचारिक आवश्यक बोध विशेष के अभाव में "विधि" की नज़र में आप केवल मूर्ख यानि निरक्षर अर्थात मुर्दा रूपी केवल ज़ीरो विशेष हो फिर चाहे ज़िन्दगी भर आप कितने ही चालाक - सफल - वैचारिक - प्रोफेसर - जानकार - सत्संग करने वाले गुरु- सतगुरु डिग्री होलडर - सफल व्यापारी इत्यादि वगैरह-वगैरह महान नितिज्ञ - धर्मात्मा ही क्यों न कहलाये ....! विधि की नज़र विशेष में तो आप केवल एक बडे महान गोल से ज़ीरो विशेष ही रहेंगे और इसी से आपका मूल्यांकन किया जायेगा ....! इसीलिये "ऐसा कम मूले न कि जै-जिस अन्त पछोताईये ...!" अर्थात करने से पहले तो तुझे पूरी तरह से छूट यानी के आज़ादी हैं द लेकिन एक बार तूने कुछ कर दिया तो फिर नतीज़ा तो प्रत्येक व्यवहारिक सोच का निश्चित विशेष ही है । तुझे तो केवल विशेष भुगतना मात्र ही

है । अतः कुछ भी सोचने से पहले अपने पिछवाडे विशेष का ख्याल अवश्य कर लिया कर क्योंकि तपना - जलना - फटना इत्यादि वगैरह- वगैरह तो इस बेचारे चूतड विशेष में ही पूरी तरह से सम्पन्न विशेष होना है और इस बेचारे के पास तो जुबान भी नहीं है अगर कहना भी चाहेगा "कुछ भी" कूँ - कूँ तो कैसे और किस भाषा में किसे कहे सुनायेगा .....? बेचारा निसहाय पिछवाडा चालाक विद्वानों विशेषों का .....!